श्री देवराजाष्टकं

श्री देवराजाष्टकं

श्रीमत्कांचीमुनिं वंदे कमलापतिनंदनं |
वरदांघ्रिसदासंगरसायनपरायणं | |

देवराजदयापात्रं श्रीकांचीपूर्णमुत्तमं |
रामानुजमुनेर्मान्यं वंदेऽहं सज्जनाश्रयं | |

नमस्ते हस्तिशैलेश श्रीमन्नंबुजलोचन |
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि प्रणतार्तिहराच्युत | | 1 | |

समस्तप्राणिसंत्राणप्रवीण करुणोल्बण |
विलसंतु कटाक्षास्ते मय्यस्मिन् जगतां पते | | 2 | |

निंदिताचारकरणं निवृत्तं कृत्यकर्मणः |
पापीयांसममर्यादं पाहि मां वरदप्रभो | | 3 | |

संसारमरुकांतारे दुर्व्याधिव्याघ्रभीषणे |
विषयक्षुद्रगुल्माढ्ये तृषापादपशालिनि | | 4 | |

पुत्रदारगृहक्षेत्रमृगतृष्णांबुपुष्कले |
कृत्याकृत्यविवेकांधं परिभ्रांतमितस्ततः | | 5 | |

अजस्रं जाततृष्णार्तमवसन्नांगमक्षमं |
क्षीणशक्तिबलारोग्यं केवलं क्लेशसंश्रयं | | 6 | |

संतप्तं विविधैर्दुःखैर्दुर्वचैरेवमादिभिः |
देवराज दयासिंधो देवदेव जगत्पते | | 7 | |

त्वदीक्षणसुधासिंधुवीचिविक्षेपशीकरैः |
कारुण्यमारुतानीतैः शीतलैरभिषिंच मां | | 8 | |

इति श्रीकांचीपूर्ण विरचितं श्री देवराजाष्टकं | |